1 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

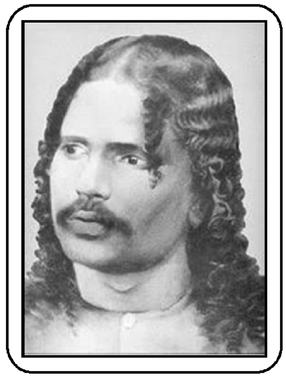

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म—**9 सितम्बर, सन् 1850 ई०।
- **जन्म-स्थान—**काशी (उ०प्र०)।
- **पिता—**गोपालचन्द्र 'गिरिधरदास'
- **माता—**पार्वती देवी।
- **पत्नी—**मन्ना देवी।
- भारतेन्दु युग के प्रवर्तक।
- **शिक्षा :** स्वाध्याय के द्वारा विभिन्न भाषाओं का ज्ञानार्जन।
- **सम्पादन :** कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र पत्रिका, हरिश्चन्द्र चन्द्रिका।
- **लेखन विधा :** कविता, नाटक, एकांकी, निबन्ध, उपन्यास, पत्रकारिता।
- **भाषा :** ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली।
- **शैली :** मुक्तक।
- **प्रमुख रचनाएँ—**प्रेम माधुरी, प्रेम तरंग, प्रेम प्रलाप, प्रेम सरोवर, कृष्ण-चरित्र।
- **मृत्यु—**6 जनवरी, सन् 1885 ई०।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता एवं भारतीय नवोत्थान के प्रतीक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 18-19वीं शताब्दी के जगत्-सेठों के एक प्रसिद्ध परिवार के वंशज थे। इनके पूर्वज सेठ अमीचन्द का उत्कर्ष भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के समय हुआ था। उन्हीं के प्रपौत्र गोपालचन्द्र 'गिरिधरदास' के ज्येष्ठ पुत्र भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे। भारतेन्दु का जन्म 9 सितम्बर, सन् 1850 ई० को इनके ननिहाल में हुआ था। जब ये 5 वर्ष के थे तब माता पार्वती देवी तथा 10 वर्ष के थे तब पिता का निधन हो गया। विमाता मोहन बीबी का इन पर विशेष प्रेम न होने के कारण इनके पालन-पोषण का भार कालीकदमा दाई तथा तिलकधारी नौकर पर रहा। किन्तु पिता की असामयिक मृत्यु के बाद इनकी शिक्षा-दीक्षा का समुचित प्रबन्ध न हो सका। क्वीन्स कालेज, वाराणसी में प्रवेश लिया, किन्तु वहाँ भी मन न रमा। ये कुशाग्र बुद्धि और तीव्र स्मरणशक्तिवाले थे। कॉलेज छोड़ने के बाद इन्होंने स्वाध्याय से हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी के अतिरिक्त बंगला, गुजराती, मराठी, मारवाड़ी, पंजाबी, उर्दू आदि भारतीय भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया। 13 वर्ष की अवस्था में इनका विवाह काशी के रईस लाला गुलाबराय की पुत्री मन्ना देवी से हुआ। इनके दो पुत्र और एक पुत्री थे, किन्तु पुत्रों का बाल्यावस्था में ही देहान्त हो गया। पुत्री विद्यावती सुशिक्षिता थी। भारतेन्दु जी को ऋण लेने की आदत पड़ गयी थी। 1884 ई० में उनकी बलिया-यात्रा एक प्रकार से अन्तिम यात्रा थी। बलिया से लौटने के अनन्तर पारिवारिक तथा अन्य सांसारिक चिन्ताओं तथा क्षय-रोग से ग्रस्त होने के कारण 6 जनवरी, 1885 ई० को 34 वर्ष 4 महीने की अवस्था में भारतेन्दु जी का देहान्त हो गया।

लक्ष्मी और सरस्वती दोनों की ही भारतेन्दुजी पर एकसाथ कृपा थी। इनकी मित्रमण्डली में जहाँ इनके समय के सभी लेखक, कवि एवं विद्वान् थे, वहाँ बड़े-बड़े राजा-महाराजा, रईस और सेठ-साहूकार भी थे। ये लड़कपन से ही परम उदार थे। इन्हें हिन्दी के प्रति अगाध और अटूट प्रेम था। इन्होंने अपनी विपुल धनराशि को राजसी ठाट-बाट, दान, परोपकार, संस्थाओं

को मुक्तहस्त से चन्दा तथा हिन्दी के साहित्यकारों की सहायता आदि पर व्यय कर दिया। इनकी साहित्यिक मण्डली में पं0 बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', पं0रबालकृष्ण भट्ट तथा पं0 प्रतापनारायण मिश्र आदि विद्वज्जन सम्मिलित थे।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अनेक भारतीय भाषाओं में कविता करते थे परन्तु ब्रजभाषा पर इनका असाधारण अधिकार था, जिसमें शृंगार रचना करने में ये सिद्धहस्त थे। केवल प्रेम को लेकर ही इनकी रचनाओं के सात संग्रह प्रकाशित हुए, जिनके नाम— **'प्रेम फुलवारी', 'प्रेम-प्रलाप', 'प्रेमाश्रु-वर्णन', 'प्रेम-माधुरी', 'प्रेम-मालिका', 'प्रेम-तरंग' तथा 'प्रेम-सरोवर'** हैं। यह समस्यापूर्ति का युग था जिसके अभ्यास ने इन्हें आशु कवि बना दिया था। हरिश्चन्द्र जी को यात्राओं का भी शौक था।

देश के सुप्रसिद्ध विद्वज्जनों ने ही इन्हें भारतेन्दु की उपाधि दी थी। भारतेन्दु वास्तव में भारतेन्दु ही थे। इनकी कीर्ति-कौमुदी इनके जीवनकाल में ही चतुर्दिक फैल चुकी थी। इन्होंने हिन्दी को तत्कालीन विद्यालयों के पाठ्यक्रम में स्थान दिलाने का प्रयत्न किया। स्वयं लिखकर तथा अपने मित्रों और आश्रितों से अनुरोधपूर्वक लिखवाकर हिन्दी साहित्य का भण्डार भरा। इन्होंने अनेक नाटक लिखे जिनका सफल अभिनय किया गया।

भारतेन्दु जी का जिस समय आविर्भाव हुआ, उस समय देश मध्ययुगीन पौराणिक जीवन में लिप्त तथा पतित था। नवीन ऐतिहासिक कारणों से विशेषतः नवीन शिक्षा और वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरूप हिन्दी प्रदेश में नवयुग की अवतारणा हुई और लेखकों में विचार-स्वातन्त्र्य का जन्म हुआ। ये नवयुग के अग्रदूत और हिन्दी साहित्य में आधुनिकता के जन्मदाता थे। इनकी रचनाएँ देश-प्रेम से ओत-प्रोत हैं। भारतवासियों की परस्पर फूट, वैमनस्य और अभारतीयता इन्हें बहुत खटकती थी।

भारतेन्दु जी ने हिन्दी गद्य का सूत्रपात किया, साहित्य-क्षेत्र की समस्त पुरानी व नयी विधाओं में रचना करके हिन्दी साहित्य को सर्वांगपूर्ण बनाया। इन्होंने लगभग 72 छोटे-बड़े ग्रन्थों का प्रणयन करके हिन्दी का प्रचार और प्रसार करते हुए हिन्दी जगत् में अपने लिए सदा के लिए स्थायी स्थान बना लिया। **पन्तजी** के शब्दों में—

''भारतेन्दु कर गये भारती की वीणा निर्माण।।''

किया अमर स्पर्शों ने जिसका बहुविधि स्वर संधान।।''

सच बात तो यह है कि ये प्रेमी जीव थे। ये संवेदनशील पर दुःखकातर और कोमल हृदय थे। अपने इन्हीं गुणों के कारण जीवन-भर आर्थिक कष्ट सहन किया। लोग इन्हें 'अजातशत्रु' कहते थे। इनका साहित्यानुराग देश-विदेश में प्रसिद्ध था।

प्रेम-माधुरी

[प्रस्तुत काव्यांश भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित 'प्रेम-माधुरी' से अवतरित किया गया है। इसमें कवि ने प्रेम की यथार्थ व्यंजना दिखायी है।]

मारग प्रेम को को समुझै 'हरिचन्द' यथारथ होत यथा है।
लाभ कछू न पुकारन में बदनाम ही होन की सारी कथा है।
जानत है जिय मेरौ भली बिधि औरु उपाइ सबै बिरथा है।
बावरे हैं ब्रज के सिगरे मोहिं नाहक पूछत कौन बिथा है।।1।।

रोकहिं जो तौ अमंगल होय औ प्रेम नसै जो कहैं पिय जाइए।
जौ कहैं जाहु न तौ प्रभुता जौ कछू न कहैं तो सनेह नसाइए।
जो 'हरिचन्द' कहैं तुमरे बिनु जीहैं न तो यह क्यों पतिआइए।
तासों पयान समै तुमरे हम का कहैं आपै हमें समझाइए।।2।।

आजु लौं जौ न मिले तौ कहा हम तो तुमरे सब भाँति कहावैं।
मेरौ उराहनो है कछु नाहिं सबै फल आपने भाग को पावैं।
जो 'हरिचंद' भई सो भई अब प्रान चले चहैं तासों सुनावैं।
प्यारे जू है जग की यह रीति बिदा की समै सब कंठ लगावैं।।3।।

व्यापक ब्रह्म सबै थल पूरन हैं हमहूँ पहचानती हैं।
पै बिना नँदलाल बिहाल सदा 'हरिचन्द' न ज्ञानहिं ठानती हैं।
तुम ऊधौ यहै कहियो उनसों हम और कछू नहिं जानती हैं।
पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं।।4।।

यमुना-छवि

[प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने प्रकृति के रम्य रूपों को आलम्बन रूप में चित्रित किया है। कवि को यमुना तट की सम्पूर्ण प्रकृति श्याममय दिखायी देती है। यमुना-जल में पड़ते चन्द्र-प्रतिबिम्ब का अलंकारपूर्ण वर्णन यहाँ किया गया है।]

तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।
झुके कूल सों जल परसन हित मनहुँ सुहाये।।
किधौं मुकुर मैं लखत उझकि सब निज-निज सोभा।
कै प्रनवत जल जानि परम पावन फल लोभा।।
मनु आतप वारन तीर कौ सिमिटि सबै छाये रहत।
के हरि सेवा हित नै रहे निरखि नैन मन सुख लहत।।1।।

तिन पै जेहि छिन चंद जोति राका निसि आवति।
जल मैं मिलिकै नभ अवनी लौं तान तनावति।।
होत मुकुरमय सबै तबै उज्जल इक ओभा।
तन मन नैन जुड़ात देखि सुन्दर सो सोभा।।
सो को कबि जो छबि कहि सकै ता छन जमुना नीर की।
मिलि अवनि और अम्बर रहत छबि इक सी नभ तीर की।।2।।

परत चन्द्र प्रतिबिम्ब कहूँ जल मधि चमकायो।
लोल लहर लहि नचत कबहुँ सोई मन भायो।।
मनु हरि दरसन हेत चन्द्र जल बसत सुहायो।
कै तरंग कर मुकुर लिये सोभित छबि छायो।।
कै रास रमन मैं हरि मुकुट आभा जल दिखरात है।
कै जल उर हरि मूरति बसति ता प्रतिबिम्ब लखात है।।3।।

कबहुँ होत सत चंद कबहुँ प्रगटत दुरि भाजत।
पवन गवन बस बिम्ब रूप जल मैं बहु साजत।।
मनु ससि भरि अनुराग जमुन जल लोटत डोलै।
कै तरंग की डोर हिंडोरनि करत कलोलै।।
कै बालगुड़ी नभ मैं उड़ी सोहत इत उत धावती।
कै अवगाहत डोलत कोऊ ब्रजरमनी जल आवती।।4।।

मनु जुग पच्छ प्रतच्छ होत मिटि जात जमुन जल।
कै तारागन ठगन लुकत प्रगटत ससि अबिकल।।
कै कालिंदी नीर तरंग जितो उपजावत।
तितनो ही धरि रूप मिलन हित तासों धावत।।
कै बहुत रजत चकई चलत कै फुहार जल उच्छरत।
कै निसिपति मल्ल अनेक विधि उठि बैठत कसरत करत।।5।।

कूजत कहुँ कलहंस कहूँ मज्जत पारावत।
कहुँ कारण्डव उड़त कहूँ जल कुक्कुट धावत।।
चक्रवाक कहुँ बसत कहूँ बक ध्यान लगावत।
सुक पिक जल कहुँ पियत कहूँ भ्रमरावलि गावत।।
कहुँ तट पर नाचत मोर बहु रोर बिबिध पच्छी करत।
जन पान न्हान करि सुख भरे तट सोभा सब जिय धरत।।6।।

('भारतेन्दु ग्रन्थावली' से)

अभ्यास प्रश्न

पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. पद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(प्रेम-माधुरी)

(क) आजु लौं जौ न मिले तौ कहा हम तो तुमरे सब भाँति कहावैं।
मेरौ उराहनो है कछु नाहिं सबै फल आपने भाग को पावैं।
जो 'हरिचंद' भई सो भई अब प्रान चले चहैं तासों सुनावैं।
<u>प्यारे जू है जग की यह रीति बिदा की समै सब कंठ लगावैं।।</u>

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक एवं रचनाकार का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(iii) इस पद्यांश में नायिका के किस दशा का चित्रण किया गया है?
(iv) उपर्युक्त पद्यांश में कौन-सा अलंकार है?
(v) उपर्युक्त पद्यांश किस छंद में है?

(ख) व्यापक ब्रह्म सबै थल पूरन हैं हमहूँ पहचानती हैं।
पै बिना नँदलाल बिहाल सदा 'हरिचन्द' न ज्ञानहिं ठानती हैं।
तुम ऊधौ यहै कहियो उनसों हम और कछू नहिं जानती हैं।
पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं।। **[2020 ZD, ZG]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक एवं रचनाकार का नाम लिखिए।
(ii) इस पद्यांश में कवि ने ब्रह्म के किस स्वरूप को महत्ता दी है?
(iii) गोपियाँ उद्धव से क्या कहती हैं?
(iv) इस पद्यांश में कौन-सा रस है?
(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(vi) गोपियाँ व्यापक ब्रह्मा को किस रूप में मानती हैं?
(vii) गोपियाँ सदैव किसके बिना 'बिहाल' रहती हैं?
(viii) इस पद्यांश में प्रयुक्त छन्द का नाम लिखिए।
(ix) गोपियाँ भली प्रकार किसके विषय में जानती हैं?
(x) सर्वव्यापक कौन हैं?
(xi) किसको छोड़कर किसे ज्ञान चर्चा रुचिकर नहीं लगती?
(xii) गोपियों की दुःखियां आँखें क्या स्वीकार नहीं करती?

(ग) रोकहिं जो तौ अमंगल होय औ प्रेम नसै जो कहैं पिय जाइए।
जौ कहैं जाहु न तौ प्रभुता जौ कछू न कहैं तो सनेह नसाइए।।
जो 'हरिचंद' कहैं तुमरे बिनु जीहैं न तो यह क्यों पतिआइए।
तासों पयान समै तुमरे हम का कहैं आपै हमें समझाइए।

प्रश्न– (i) प्रस्तुत पद्यांश के कवि एवं कविता का उल्लेख कीजिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) नायिका द्वारा जगत की किस रीति का वर्णन किया गया है?
(iv) पद्यांश में नायिका की किस मनोदशा का उल्लेख है?
(v) उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(यमुना-छवि)

(घ) कबहुँ होत सत चंद कबहुँ प्रगटत दुरि भाजत।पवन गवन बस बिम्ब रूप जल मैं बहु साजत।।
मनु ससि भरि अनुराग जमुन जल लोटत डोलै। कै तरंग की डोर हिंडोरनि करत कलोलै।।
कै बालगुड़ी नभ मैं उड़ी सोहत इत उत धावती। कै अवगाहत डोलत कोऊ ब्रजरमनी जल आवती।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक एवं रचयिता का नाम लिखिए।
(ii) कवि को यमुना नदी के जल पर पड़े चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को देखकर क्या अनुभूति होती है?
(iii) इस पद्यांश में कवि ने किस प्रसंग का वर्णन किया है?
(iv) 'मनु ससि भरि अनुराग जमुन जल लोटत डोलै' में कौन-सा अलंकार है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(ङ) तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये। झुके कूल सों जल परसन हित मनहुँ सुहाये।।
किधौं मुकुर मैं लखत उझकि सब निज-निज सोभा। कै प्रनवत जल जानि परम पावन फल लोभा।।
मनु आतप वारन तीर कौ सिमिटि सबै छाये रहत। के हरि सेवा हित नै रहे निरखि नैन मन सुख लहत।।

[2019 CN, CQ, CR]

प्रश्न– (i) पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) कवि की दृष्टि में यमुना तीर पर वृक्ष क्यों छाये हुए हैं?
(iii) 'तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये' में कौन-सा अलंकार है?
(iv) "किधौं मुकुर मैं लखत उझकि सब निज-निज शोभा" का आशय स्पष्ट कीजिए।
(v) रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।
(vi) यमुना तट पर वृक्ष किस रूप में सुशोभित हैं?
अथवा तट पर वृक्ष किस रूप में दिखाई पड़ रहे हैं?
(vii) वृक्ष जल के दर्पण में क्या देख रहे हैं?
अथवा वृक्ष जल-दर्पण में क्या देखना चाहते हैं?
(viii) 'मनु आतप वारन तीर' में अलंकार बताइए।

(च) मनु जुग पच्छ प्रतच्छ होत मिटि जात जमुन जल।
कै तारागन ठगन लुकत प्रगटत ससि अबिकल।।
कै कालिन्दी नीर तरंग जितो उपजावत।
तितनो ही धरि रूप मिलन हित तासों धावत।।
कै बहुत रजत चकई चलत कै फुहार जल उच्छरत।
कै निसिपति मल्ल अनेक विधि उठि बैठत कसरत करत।। **[2020 ZC]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कसरतें करते कौन दिखाई पड़ रहा है?
(iv) तरंगें कौन उत्पन्न कर रहा है?
(v) यमुना के जल में चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब के दिखने व छिपने की तुलना कवि किससे करता है?
(vi) कवि द्वारा यमुना की छवि का किस समय का वर्णन किया गया है?
(vii) कवि ने चन्द्रमा के किन रूपों का वर्णन किया है?
(viii) 'जात जमुन जल' में कौन-सा अलंकार है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नांकित काव्य-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
(क) प्यारे जू है जग की यह रीति बिदा की समै सब कंठ लगावैं।
(ख) पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं।
2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
3. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के जीवन-परिचय एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
[2017 MD, ME, 19 CL,CP, CR, 20 ZA, ZB, ZD]
4. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए।
5. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की 'यमुना-छवि' कविता के भाव-सौन्दर्य का निरूपण कीजिए।

6. "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिन्दी काव्य का वैतालिक कहा गया है।" आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं?
7. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काव्य-रचनाओं पर भक्त-कवियों का प्रभाव कहाँ तक दृष्टिगत होता है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
8. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काव्य-रचनाओं पर रीतिकालीन कवियों के प्रभाव का निरूपण कीजिए।
9. "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काव्य-रचनाओं में मध्ययुगीन और आधुनिक प्रवृत्तियों का समन्वय हुआ है।" समुचित उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
10. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के व्यक्तित्व पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की प्रमुख रचनाओं का नामोल्लेख कीजिए।
3. भारतेन्दु जी द्वारा वर्णित 'यमुना-छवि' के भाव-सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।
4. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचना 'यमुना-छवि' के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. शृंगार रस का लक्षण बताते हुए 'प्रेम-माधुरी' शीर्षक कविता से एक उदाहरण दीजिए।
2. निम्नांकित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

   (क) तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।

   (ख) मिलि अवनि और अम्बर रहत छबि इक सी नभ तीर की।
3. 'यमुना-छवि' शीर्षक कविता में अनुप्रास, सन्देह एवं उत्प्रेक्षा अलंकारों की भरमार है। इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।